Devbhoomi Journal of Multidisciplinary Research (DJMR)
URL: www.usvv.ac.in/djmr Email: djmr@usvv.ac.in
Volume-1, Issue-1, Jan – June 2023

स्वतंत्रता आंदोलन में हिन्दी पत्रकारिता

डॉ. सुबोध कुमार
सह-आचार्य, पत्रकारिता विभाग
वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा

भारत का स्वतंत्रता संग्राम अनूठा है। अंग्रेजों के खिलाफ पैदा हुई बगावत भारतीय जनमानस के हर हिस्से में धीरे-धीरे जज्ब होती चली गई। 1857 से 1947 तक के सफर में अनेक आंदोलन, सत्याग्रह और विद्रोह हुए जिन्होंने अंग्रेजी हुकूमत को आखिरकार घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया। आंखों के सामने का विद्रूप जब वैचारिक शक्ल लेकर अखबारों और पत्रिकाओं के माध्यम से लोगों के सामने आता था तो बगावती तेवरों को एक नई दिशा मिलती थी। लोगों में आजादी पाने की ललक देखी जा सकती थी। ऐसा नहीं था कि केवल पत्रकारिता सरकार विरोधी थी, कुछ अखबार गोरों का गुणगान भी करते थे। पर जो अखबार सरकारी व्यवस्था की पोल पट्टी खोल रहे थे, उनके लिए राहें आसान नहीं थीं। हिन्दी पट्टी के अखबारों ने काफी दंश सहन किया। कुछ अखबार और पत्रिकाओं ने जैसे ही सरकार के खिलाफ हमलावर रूख अपनाया, अंग्रेजों ने उन्हें या तो प्रतिबंधित किया या फिर संपादक पर जुर्माना लगाया या उन्हें जेल भेज दिया। हिक्की गजट निकालने वाले जेम्स आगस्टस हिक्की सबसे पहले अंग्रेजी सरकार का निशाना बने। उनके बगावती तेवरों ने कोलकाता में गोरी सरकार की नाक में दम कर रखा था। उसी के बाद 'उदंत मार्तंड' भी कोलकाता से ही निकाला गया। गैर हिन्दी भाषी राज्य से हिन्दी का पहला समाचार पत्र छपा तो अंग्रेजी सत्ता की आंचा की किरकिरी बना रहा। खैर समय बीतता गया और भाषायी पत्रकारिता का प्रसार भी होता गया। पूर्वोत्तर के अलावा दक्षिण भारतीय भाषाओं में भी अखबार और पत्रिकाएं इस दौरान निकलीं। सभी ने देश की आजादी में बराबर का योगदन दिया। अवध प्रांत में हिन्दी के अखबारों ने आजादी के आंदोलन के लिए अपनी अलग ही छाप छोड़ी। जनजागरूकता का ऐसा प्रक्रम वास्तव में विस्मित कर देने वाला था।

साहित्य पुनरावलोकन-

''लोकतंत्र की सफलता और विफलता उसकी पत्रकारिता पर निर्भर करती है।'' - स्काट पेली

''पत्रकारिता का एकमात्र लक्ष्य सेवा होना चाहिए। अखबारी प्रेस एक बड़ी ताकत है, लेकिन जैसे अनियंत्रित जल-प्रवाह में गांव के गांव डूब जाते हैं, फसलें बर्बाद हो जाती हैं, उसी तरह अनियंत्रित लेखनी सेवा करने की बजाए विध्वंस लाने का काम करती है"। -महात्मा गांधी

भारतीय राष्ट्रवाद को जीवित रखने और विकसित करने में हिन्दी पत्रकारिता का बहुत बड़ा योगदान है। प्रारंभ से ही हिन्दी पत्रकारिता अपने ऊँचे आदर्शों का पालन करती आ रही है। सदा से ही राष्ट्रीयता उसका मुख्य स्वर रहा है। राष्ट्रीय सम्मान और मर्यादा की रक्षा के लिए पत्रकारों ने अनेक कष्ट और

यातनाएँ सही, किंतु वे अपने कर्तव्य से विचलित नहीं हुए। स्वतंत्रता पूर्व की हिन्दी पत्रकारिता ने राष्ट्रीय आंदोलन को गति, शक्ति और दिशा प्रदान की। डॉ अर्जुन तिवारी ने अपने कई आलेखों में हिन्दी पत्रकारिता के उन कालखंडों पर विस्तृत चर्चा की है, जिनमें हिन्दी के अखबारों और पत्र पत्रिकाओं ने खासा चुनौतियों का सामना किया है। स्वतंत्रता आंदोलन के दौर में वास्तव में हिन्दी पट्टी के अनेक अखबारों और पत्रों के सहारे उस आग को पैदा करने का प्रयास किया गया जो वास्तव में उस दौर की मांग थी। डॉ कृष्णदेव अरविंद ने भी राष्ट्रीय चेतना और पत्रकारिता के विविध पक्षों को रेखांकित करते हुए हिन्दी पत्रकारिता की भूमिका पर लेखनी चलाई है।

हिन्दी पत्रकारिता का सूत्रपात-

भारतीय हिन्दी पत्रकारिता पर दृष्टिपात करते हैं तो पता चलता है कि पूर्वी प्रदेश बंगाल की धरती से इसका प्रादुर्भाव हुआ है। 'उदंत मार्तंड' के रूप में पहला हिन्दी समाचार पत्र पं युगल किशोर शुक्ल द्वारा कोलकाता से निकाला गया। पत्र तो ज्यादा दिनों तक प्रकाशित नहीं हो सका, लेकिन इसने अंग्रेजी सरकार की जड़ों को हिलाने में खासा योगदान दिया। वैसे हिन्दी पत्रकारिता की जब-जब बात होती है तो काशी और प्रयागराज का नाम सबसे ऊपर आता है। हिन्दी पट्टी यानी अवध प्रांत में स्वतंत्रता आंदोलन की पत्रकारिता को काशी और प्रयाग के अखबारों से खासा संबल मिला। इसके अलावा गोरखपुर, लखनऊ और कानपुर ने भी हिन्दी पत्रकारिता की अलख जगाई, जिससे अवध प्रांत में जनचेतना का व्यापक संचार हुआ। बात 1857 के विद्रोह से शुरू करते हैं। वास्तव में अंग्रेजों के आगे भारतीय जनता असहाय थी। उसके सामने कोई विकल्प नहीं था सिवाय इसके कि अपने अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी जाए। अखबारों का प्रकाशन तो हो रहा था, लेकिन हिन्दी पट्टी के लोगों को इसका भान नहीं था। इसी वक्त भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने अंग्रेजों से बौद्धिक लड़ाई लड़ने का प्रण लिया और जनसंचेतना के प्रसार की प्रतिबद्धता जताई। अल्पायु में ही उन्होंने वो कार्य कर दिखाया जो बड़े-बडे कलमकार करने से हिचकते थे। 1867 में उन्होंने 'कविवचन सुधा' का प्रकाशन किया। 1873 में 'हरिश्चंद्र मैगजीन' निकाली और अगले ही वर्ष 1874 में उन्होंने 'हरिश्चन्द्र चंद्रिका' तथा महिलाओं के लिए 'बालाबोधिनी' पत्रिका का प्रकाशन किया। उनका मंतव्य था कि समाज जागे और अंग्रेजों की मनामनियों का विरोध करे तथा अपना रास्ता बनाए। हिन्दी साहित्य में इसे भारतेंदु काल की संज्ञा दी गई है। वास्तव में यही काल ऐसा था जब हिन्दी ने भाषा के तौर पर समृद्धता हासिल की और स्वतंत्रता की लड़ाई के लिए एक मजबूत रूपरेखा तैया हो सकी। भारतेंदु बाबू ने लोगों के बीच आवाज बुलंद की तथा कई पत्रकारों को तैयार किया। साथ ही हिन्दी भाषा को अर्श पर पहुंचाने का कार्य भी किया। इसी का परिणाम प्रयाग से तब देखने का मिला जब बालकृष्ण भट्ट ने 1877 में 'हिन्दी प्रदीप' का प्रकाशन आरंभ किया। भट्ट जी भारतेंदु बाबू से काफी प्रभावित थे। 'हिन्दी प्रदीप' में भी गोरी सरकार के खिलाफ विचारोत्तेजक टिप्पणियां व लेख प्रकाशित

होते थे और व्यवस्था पर चोट की जाती थी। बताते हैं कि अंग्रेजी सरकार के खिलाफ कई कर्कश टिप्पणियां प्रकाशित करने के चलते भट्ट जी को खासा परेशानी हुई। अंग्रेजी हुकूमत ने उन पर जुर्माना लगाया जिसे वह अदा नहीं कर पाए लिहाजा उन्होंने 'हिन्दी प्रदीप' का प्रकाशन ही बंद कर दिया। हालांकि भारतेंदु बाबू और भट्ट जी के प्रयासों से स्वतंत्रता आंदोलन की आगे की लड़ाई के लिए हिन्दी पत्रकारिता और हिन्दी लेखकों को एक नया मार्ग जरूर मिल गया।

1888 में मिर्जापुर से माधव प्रसाद ने 'खिचड़ी समाचार' का प्रकाशन आरंभ किया, लेकिन विचारों की कठोरता के चलते इसे बंद करना पड़ा। अंग्रेजों ने संपादक को जेल भी भेजा। राजनीतिक जनचेतना को प्रबल करने की अतीव इच्छा उस वक्त के पत्रकारों और साहित्य वेत्तओं में थी लिहाजा कई छोटी-बड़ी पत्रिकाएं भी अंग्रेजों से लोहा लेने मैदान में उतरीं। 1888 में गोरखपुर से 'विद्याधर्म दीपिका' का प्रकाशन चन्द्रशेखर ने किया तथा देवरिया से 'क्षत्रिय' पत्रिका का संपादन केबी मल्ल ने आरंभ किया। इन पत्रिकाओं ने अपनी रचनाओं से जनमानस को उद्वेलित किया। 19वीं शताब्दी के अंत तक लोगों को यह अहसास हो गया था कि अब अंग्रेजों का विरोध करना ही पड़ेगा, अगर अपने का स्वाधीन रखना है।

बीसवीं सदी की शुरुआत में हिन्दी पत्रकारिता और संपुष्ट हुई जब चिंतामणि घोष ने 1 जनवरी 1900 को प्रयागराज से 'सरस्वती पत्रिका' निकाली। 1903 में इसके संपादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी बने, वे 17 वर्षों तक इसका संपादन करते रहे। पत्रिका में साहित्य और कविताओं के अलावा लेखों का भरमार थी। सामाजिक संचतेतना के प्रसार में पत्रिका ने खासा योगदान दिया। बाद में पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, ठाकुर श्रीनाथ सिंह श्रीनारायण चतुर्वेदी तथा देवीदत्त शुक्त ने भी इस पत्रिका का संपादन किया। इसका प्रकाशन झांसी और कानपुर से भी किया गया। द्विवेदी जी ने भाषा के महत्व और गद्य-पद्य की राह को प्रशस्त करने में और खड़ी बोली को प्रोत्साहित करने में अहम भूमिका निभाई।

तिलक का योगदान-

बीसवीं सदी की शुरुआत में बालगंगाधर तिलक ने पत्रकारिता में कदम रखा और उनका प्रभाव हिन्दी पट्टी में खासा जम गया। उनके प्रभाव का असर ऐसा था कि अंग्रेजों ने उन्हें 'फादर ऑफ इंडियन अनरेस्ट' की संज्ञा दी। चूंकि तिलक ने पहले ही 1881 में मराठी में 'केसरी' अखबार निकाला और अंग्रेजी में मराठा अखबार निकालकर अंग्रेजों के कारनामों को उजागर करना शुरू कर दिया था। केसरी का प्रसार म्यानमार, श्रीलंका तक हो गया और उसका सर्कुलेशन भी सबसे ज्यादा था। डॉ वशिष्ठ नारायण सिंह अपने एक लेख में उस वक्त की पत्रकारीय परिस्थितियों का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि भारतीयों की दुर्दशा उस वक्त देखी नहीं जा सकती थी, क्योंकि अंग्रेजी हुकूमत ने दमनात्मक दौर चला रखा था ऐसे में मिर्जापुर से बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन 1900 ईस्वी में 'आनंद कादम्बिनी' का मासिक प्रकाशन शुरू किया। चौधरी जी बड़े निडर प्रवृत्ति के लेखक पत्रकार थे। उस दौर में अकाल पड़ा तो चौधरी जी की लेखनी आग उगलती थी और सरकार पर ज्यादा हमलावर रही। चौधरी जी के समानांतर ही 1900 ईस्वी

में गाजीपुर से गोपालदास गहमरी ने 'जासूस' पत्र निकाला और लोगों को चेताया कि वे सरकार से कदापि डरे नहीं, मुश्किलों का डटकर सामना करें। 1907 ईस्वी में एसएन भटनागर ने इलाहाबाद से 'स्वराज्य' का प्रकाशन किया और मालवीय जी की प्रेरणा से उन्होंने इसी साल 'अभ्युदय' भी निकाला। दोनों पत्रों का आजादी में गहरा योगदान है। 1909 में सुंदरलाल ने 'कर्मयोगी' का प्रकाशन प्रयाग से किया, लेकिन अगले ही वर्ष उसे अंग्रेजों ने बंद करा दिया। 1919 ईस्वी में गणेश शंकर विद्यार्थी ने गोरखपुर से 'स्वदेश' का प्रकाशन किया। इसके संपादक दशरथ प्रसाद द्विवेदी थे जो लिखते थे कि चाहे जो हो जाए हम अपनी मातृभूमि के लिए हर तरह की कुर्बानी देंगे। इसी बीच मालवीय जी ने भी पत्रकारिता के जरिए अपनी आवाज बुलंद की। उन्होंने 'हिन्दुस्तान', 'अभ्युदय', 'लीडर' और 'सनातन धर्म' जैसे पत्रों का प्रकाशन समय-समय पर करके अंग्रेजों को आइना दिखाया।

गांधी जी का प्रभाव-

वास्तव में बीसवीं सदी के 20 साल गुजर चुके थे, अंग्रेजी सरकार की कुत्सित नीतियां जनमानस को परेशान कर रही थीं। और ऐसे में भारतीय राजनीति पर महात्मा गांधी का प्रभाव जमने लगा था। उन्होंने हरिजन, नवजीवन, हरिजन सेवक, सत्याग्रह और यंग इंडिया जैसे पत्रों के माध्यम से अलगख जगाई। यही दौर था जब काशी से दैनिक 'आज' का प्रकाशन होने लगा था। शुरू में इसके संपादक श्रीप्रकाश जी थे और बाद में बाबूराव विष्णु पराड़कर जी ने इसके संपादन का जिम्मा थामा। आज का उद्देश्य साफ था कि देश को अंग्रेजों से कैसे मुक्त कराया जाए और स्वतंत्रता हासिल की जाए। 1930 में नमक आंदोलन और 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के अलावा कई मौकों पर अंग्रेज अधिकारियों ने आज अखबार को बंद कराने की कई कोशिशें कीं और आज अखबार के बंद होने के बाद काशी के लोगों ने गुप्त तरीके से रणभेरी अखबार का प्रकाशन आरंभ किया। अंग्रेज चाहकर भी इसके प्रकाशन का पता नहीं लगा पाए और इस अखबार ने अंग्रेजों के खिलाफ खूब लिखा। इसी दौर में 1930 में मुंशी प्रेमचंद ने 'हंस' का प्रकाशन आरंभ किया और इसे भी अंग्रेजों की नाराजगी सहन करनी पड़ी। पराड़कर जी ने काशी से 1943 में 'संसार' नामक पत्र निकाला जो केवल दो साल तक ही चल सका। इस पत्र ने अंग्रेजी सरकार के खिलाफ काफी उग्र स्वर बुलंद किए, जिससे यह भी गोरी सरकार के आंखों का किरकिरी बना रहा।

निष्कर्ष - वर्ष 1947 में जब भारत को आजादी मिली तब तक हिन्दी पत्रकारिता ने उत्तर भारत में अपना एक मुकाम बना लिया था। हिन्दी पट्टी के अखबारों ने जनजागरण में काफी भूमिका निभाई। महात्मा गांधी, भारतेदु हरिश्चंद, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, गणेश शंकर विद्यार्थी, मुंशी प्रेमचंद, मदन मोहन मालवीय, महादेवी वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के अलावा अनेक बुद्धिजीवी और क्रांतिकारी लेखकों तथा कवियों ने अपने लेखों और कविताओं से जनमानस को जागृत करने में अपनी महती भूमिका अदा की। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अखबारों और पत्रिकाओं ने अंग्रेजी सत्ता से केवल टक्कर लेने का

ही मन नहीं बनाया बल्कि उनका मंतव्य साफ था कि लोगों को स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए किस तरह से उद्वेलित किया जाए। हिन्दी पट्टी में पहाड़ी इलाकों से भी अनेक पत्रों का समय-समय पर प्रकाशन हुआ। आर्थिक संकट और अभावों में अनेक समाचार पत्र निकाले गए, लेकिन सभी में आजादी पाने का जुनून दिखा। वास्तव में आजादी के पहले की हिन्दी पत्रकारिता एक मिशन के रूप में कार्य कर रही थी। पत्रकार कर्ज लेकर अखबार निकाल रहे थे और यह भी जानते थे कि कभी उनका अखबार अंग्रेजों की दमन दृष्टि का शिकार हो सकता है। हिन्दी पत्रकारिता को स्वतंत्रता आंदोलन से अलग करके नहीं देखा जा सकता है। इन अखबारों और पत्र-पत्रिकाओं का योगदान सदैव स्वर्णक्षरों में अंकित रहेगा और आने वाली संततियां इनकी ऋणी रहेंगी।

संदर्भ -

- तिवारी, डॉ अर्जुन, पं. दशरथ प्रसाद के विशिष्ट लेख, स्वतंत्रता संग्राम की पत्रकारिता और पं दशरथ प्रसाद द्विवेदी, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1998, पृष्ठ 84-112।
- अरविंद, डॉ कृष्णदेव, राष्ट्रीय चेतना एवं पत्रकारिता, हिन्दी पत्रकारिता और स्वतंत्रता संग्राम, नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिग हाउस, 2011, पृष्ठ 23-52।
- नटराजन जे, हिस्ट्री ऑफ इंडियन जर्नलिज्म, नई दिल्ली, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, 2010, पृष्ठ 5-78।
- कुमार, केवल जे, मास कम्यूनिकेशन इन इंडिया, मुंबई, जैको पब्लिशिंग हाउस, 1994, पृष्ठ 20-56।
- स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी पत्रकारिता की भूमिका (2020), समय साक्ष्य, Retrieved July18, 2021, from https://samaysakshya.co.in/
- स्वतंत्रता संग्राम और पत्रकारिता (2020), हिंदी विवेक, Retrieved July 15, 2021, https://hindivivek.org/
- आजादी की लड़ाई में मीडिया की भूमिका (2018), दिव्य हिमाचल, Retrieved July 22, 2021, https://www.divyahimachal.com/